एम.एच.डी.-14

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2008

एम.एच.डी.-14 : हिन्दी उपन्यास-1

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *पहला और छठा प्रश्न* ***अनिवार्य*** *है । शेष में से किन्हीं* ***दो*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *10×2=20*

(क) एक वे स्त्रियाँ हैं, जो आराम से तकिए लगाए सो रही हैं, लौंडियाँ पैर दबाती हैं । एक मैं हूँ कि यहाँ बैठी हुई अपने नसीब को रो रही हूँ । मैं यह सब दुःख क्यों झेलती हूँ ? एक झोपड़ी में टूटी खाट पर सोती हूँ, रूखी रोटियाँ खाती हूँ । नित्य घुड़कियाँ सुनती हूँ, क्यों ? मर्यादा-पालन के लिए ही न ? लेकिन संसार मेरे इस मर्यादा-पालन को क्या समझता है ? उसकी दृष्टि में इसका क्या मूल्य है ? क्या यह मुझसे छिपा हुआ है ? दशहरे के मेले में, मोहर्रम के मेले में, फूल-बाग़ में, मन्दिरों में, सभी जगह तो देख रही

हूँ । आज तक मैं समझती थी कि कुचरित्र लोग ही इन रमणियों पर जान देते हैं, किन्तु आज मालूम हुआ कि उनकी पहुँच सुचरित्र और सदाचार-शील पुरुषों में भी कम नहीं है ।

(ख) मुझे मेरे अहंकार ने डुबाया, मैं अपने ख्याति-प्रेम के हाथों मारी गयी । मेरा वह धर्मानुराग, मेरी वह विवेकहीन मिथ्या भक्ति, मेरे वे आमोद-प्रमोद, मेरी वह आवेशमयी कृतज्ञता, जिस पर मुझे अपने संयम और व्रत को बलिदान करने में लेशमात्र भी संकोच न होता था, केवल मेरे अहंकार की क्रीड़ाएँ थी । इस व्याध ने मेरी प्रकृति के सबसे अभेद्य स्थान पर निशाना मारा । उसने मेरे व्रत और नियम को धूल में मिला दिया । केवल अपने ऐश्वर्य-प्रेम के हेतु मेरा सर्वनाश कर दिया ।

(ग) आधिपत्य त्याग करने की वस्तु नहीं है । संसार का इतिहास केवल इसी शब्द आधिपत्य-प्रेम पर समाप्त हो जाता है । मानव-स्वभाव अब भी वही है जो सृष्टि के आदि में था । अंगरेज़-जाति कभी त्याग के लिए, उच्च सिद्धान्तों पर प्राण देने के लिए प्रसिद्ध नहीं रही । हम सब-के-सब-मैं लेबर हूँ — साम्राज्यवादी हैं । अंतर केवल उस नीति में है जो भिन्न-भिन्न दल इस जाति पर आधिपत्य जमाए रखने के लिए ग्रहण करते हैं । कोई शासन का उपासक है, कोई सहानुभूति का, कोई चिकनी-चुपड़ी बातों से काम निकालने का । बस, वास्तव में नीति कोई है ही नहीं, केवल उद्देश्य है और वह यह कि क्योंकर हमारा आधिपत्य उत्तरोत्तर सुदृढ़ हो ।

(घ) उसके गले में क़ैदी की ज़ंजीर न डालिए । विधवा-विवाह का प्रचार कीजिए, ख़ूब ज़ोरों से कीजिए, लेकिन यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि जब कोई अधेड़ आदमी किसी युवती से ब्याह कर लेता है तो क्यों अख़बारों में इतना कुहराम मच जाता है । योरप में अस्सी बरस के बूढ़े युवतियों से ब्याह करते हैं, सत्तर वर्ष की वृद्धाएँ युवकों से विवाह करती हैं, कोई कुछ नहीं कहता । किसी को कानों-कान ख़बर भी नहीं होती । हम बूढ़ों को मरने के पहले ही मार डालना चाहते हैं । हालाँकि मनुष्य को कभी किसी सहगामिनी की ज़रूरत होती है तो वह बुढ़ापे में, जब उसे हरदम किसी अवलंब की इच्छा होती है, जब वह परमुखापेक्षी हो जाता है ।

2. प्रेमचन्द के औपन्यासिक साहित्य का विस्तृत विवेचन कीजिए । *10*

3. 'सेवासदन' में किन-किन समस्याओं का अंकन किया गया है ? विश्लेषण कीजिए । *10*

4. 'प्रेमाश्रम' में वर्णित खेतिहर समाज की समस्याओं पर प्रकाश डालिए । *10*

5. सूरदास के चरित्र के विविध आयामों पर चर्चा कीजिए । *10*

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5×2=10

(i) प्रेमचन्द का वैचारिक साहित्य

(ii) 'ग़बन' में मध्यवर्ग

(iii) प्रेमशंकर का चरित्र

(iv) 'रंगभूमि' में अंग्रेज़